धार्मिक अभिप्राय

भारत के विभिन्न राज्यों के
विभिन्न धर्मगुरुओं के द्वारा
विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों की ओर से
गंदे प्रसार तंत्र के खिलाफ दिये गये पत्र

भारत की करोड़ो की जनता के
प्रतिनिधित्व द्वारा गंदे प्रसारतंत्र के विरोध में
धर्मगुरुओं के स्पष्ट अभिप्राय

युवा जागरण मंच

अखिल भारतीय संस्कृति रक्षक दल (भारत)

= संकलन =

अहो ! श्रुतम्

बाबुलाल सरेमल

मोबाइल – 94265 85904 / E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

मार्च, २०२१

माघ, २०७७

युवा जागरण मंच

6, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंदनगर पोस्ट ऑफिस के पास, भट्ठा, अहमदाबाद – ३८०००७. गुजरात

दिनांक: ६/३/२१

प्रति

विषय:OTT प्लेटफॉर्म पर प्रसारित हो रहे गंदी गालियाँ, व्यभिचार और अश्लीलताके गंदे - गलीच कार्यक्रमों पर तत्काल प्रभाव से प्रभावी नियंत्रण लाने हेतु विनम्र निवेदन

महोदय श्री

आपके कुशल मंगल की कामनायें।

ज्ञान - प्रसार के आपके सभी सम्यक पुरुषार्थो की में अपने अंतरमन से अनुमोदना करता हूँ।

आप जानते ही है की वर्तमान में OTT मीडिया भयानक अश्लीलता का प्रसारण कर रहा है।

जिससे अखबार आदि पढना भी तेजी से छूट रहा है और संस्कृति का अधःपतन भी हो रहा है।

सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) ने दिनांक: 5/३/२१ - शुक्रवारको कहा कि OTT मीडिया पर केन्द्र के नियमन महज दिशा निर्देश हैं, इनमें ऑनलाइन स्ट्रीमिंग (OTT) प्लेटफॉर्म के खिलाफ कार्रवाई को लेकर कोई प्रावधान नहीं हैं.

केंद्र की ओर से पेश सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि सरकार उचित कदमों पर विचार करेगी, डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए सभी तरह के नियमों को अदालत के समक्ष पेश किया जाएगा.

ऐसे मीडिया को नियंत्रण में लाने के लिये एक आर्टिकल इसके साथ निःस्वार्थ भाव से भेजा है।

सादर

भवदीय
अभय शाह
युवा जागरण मंच

OTT गाइडलाइन पर 10 सीधे प्रश्न

प्रसार तंत्र की गंदगी को मिटाने के लिये सरकार ने एक कदम हो उठाया, पर गाइडलाइन को देखकर अभी भी इस देश के करोड़ों सज्जनों के मन में कुछ प्रश्न उठ रहे हैं, जैसे कि...

प्र.1 मेरी उम्र 18 साल से ज्यादा है, तो क्या इससे मुझे किसी की माँ, बहन या बेटी को एकदम गंदी स्थिति में देखने का अधिकार मिल जाता है?

प्र.2 सरकार ने मुझे ऐसा अधिकार दे दिया इसीलिये क्या इस देश की बहू-बेटियों को प्रतिदिन कैमरे के सामने अपने कपड़े उतारने पड़ेंगे या उतरवाने पड़ेंगे ?

प्र.3 क्या सभी बलात्कारी और व्यभिचारी 18 साल से कम उम्र के ही होते हैं?

प्र.4 प्रतिदिन इतने गंदे दृश्य प्रसारित होते रहेंगे तो क्या बलात्कार, हिंसा, खून, घरेलू हिंसा, बाहरी हिंसा वगैरह अपराध बढ़ेंगे नहीं ?

प्र.5 क्या 18 साल से अधिक उम्र का होना इसका अर्थ भगवान होना होता है? जिसे गंदे से गंदा दृश्य देखने पर भी जातीय उन्माद होता ही नहीं? और कोई दुर्घटना घटती ही नहीं ?

प्र.6 जिस तरह एडल्ट प्रोग्राम्स दूरदर्शन वगैरह पर नहीं आते एवं एडल्ट्स फिल्म्स देखने के लिये बच्चे को थियेटर में एन्ट्री नहीं दी जाती, क्या इस तरह OTT आदि प्रोग्राम्स से बच्चे को बचाकर रखना संभव है ?

प्र.7 क्या 18 साल से नीचे की व्यक्तियों के मन में ही नारी सम्मान की भावना जीवंत रहनी चाहिये ?

प्र.8 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ 'भारतीय संस्कृति एवं स्वस्थ पारिवारिक जीवन की हत्या करने का अधिकार' होता है ?

प्र.9 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का अर्थ सामाजिक अपराध और विकृतियों को फैलाने का अधिकार होता है ?

प्र.10 OTT की वजह से देशभर में बलात्कार, नारी-अपमान, यौन-शोषण, घरेलू व्यभिचार एवं हिंसा में भयानक वृद्धि हुई है, इसीलिये कड़े कानून एवं कड़ी सजा की असह्य आवश्यकता थी, तो ऐसा करने के बजाय एडल्ट्स कैटेगरी में सेक्स, न्यूडीटी वगैरह दिखा सकते हैं ऐसी प्रेरणा दी गयी है, तो क्या सरकार यह साबित करना चाहती है कि वह नारी की बर्बादी करने के लिये ही उतारू हो गयी है ?

8 Questions on

अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य

अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर सरकार ने एडल्ट केटेगरी में गंदी से गंदी सिरीज़ को शब्दशः परमिशन दे दी है और दूसरी ओर समग्र देश में यौन अपराध और तलाक बढ़ रहे हैं, जिनमें ज्यादातर हिस्सा एडल्ट्स का ही रहता है, तब सहज रूप से कुछ प्रश्न उठ रहे हैं ।

प्र.1 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य किसी मासूम बेटी के जीवन से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ?

प्र.2 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर कोई व्यक्ति गाँव के बाज़ार में अपने आपको बिना कपड़े अभिव्यक्त कर सकता है ?

प्र.3 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का मूल्य करोड़ों स्वस्थ विवाहित जीवन से भी ज्यादा है ?

प्र.4 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के पुरस्कर्ता करोड़ों ऊज़ड़ी हुई जिंदगीयों को सँवारने की जिम्मेदारी लेंगे ?

प्र.5 क्या अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के पुरस्कर्ता उस प्रत्येक बलात्कार को रोकने में सफल होंगे ? जो अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का ही परिणाम होगा ?

प्र.6 छिपाने जैसा भी सब कुछ दिखाना - यह अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पशुओं में ही हो सकता है, मानवीय सभ्यता में उसका स्थान कैसे हो सकता है ?

प्र.7 यदि अश्लील अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य सही है, तो क्या अभी तक इस देश में प्रसारतंत्र के जो नियम थे, वे गलत थे ? क्यों उन नियमों के पीछे कोई सशक्त हेतु विद्यमान नहीं थे ? क्यों इन नियमों को बनाने वाली और उसका पालन करानेवाली सरकार पागल थी ?

प्र.8 आप थियेटर में गंदगी नहीं दिखा सकते, टी.वी. पर नहीं दिखा सकते, जर्नल्स में नहीं दिखा सकते, होर्डिंग्स या पोस्टर्स में नहीं दिखा सकते, पर नेट पर दिखा सकते हैं ।

क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि आप एक मानव को पानी में डुबाकर नहीं मार सकते, आप उसे ज़हर नहीं दे सकते, आप उसे जिंदा जला नहीं सकते, आप उसे ऊँची इमारत से गिरा नहीं सकते, पर हाँ, आप उसका गला काट सकते हैं ।

आप एक भी प्रकार की हत्या पर से पाबंदी हटा लें, तो उस मानव को तो मरना ही होगा न ? तो फिर ऐसी परमिशन देने में कौन-सी देश सेवा है? और कौन सी समझदारी भी है ?

Who Adults

Adults का अर्थ होता है

परिपक्व व्यक्ति।

जिसके पास चित्रों से निर्लेप रहने की शक्ति हो।

जो अश्लील चलचित्रों को देखने के बावजूद अपनी विवेकशक्ति न गवाये। जो अपने शरीर, मन, रोजगार, परिवार इन सबको बर्बाद करते हुए उन गंदे प्रोग्राम्स से चिपका हुआ न रहे। जो गंदे प्रोग्राम्स के प्रभाव में आकर आसपास की व्यक्ति या अपनी भाभी, बहन, बेटी या माँ पर जबरदस्ती न कर बैठे।

अब आप बताइये ऐसे एडल्ट्स व्यक्ति की उम्र कौन सी होती है ? 18 साल ?

25 साल का व्यक्ति पड़ोसी की बेटी से जबरदस्ती करता है। 20 साल की महिला गंदे प्रोग्राम्स के प्रभाव में आकर व्यभिचार शुरू कर देती है। और अपने पारिवारिक जीवन का सत्यानाश कर देती है।

35 साल का जवान 8-8 या 10-10 घंटों तक इसी गंदगी का शिकार बनता रहता है। और अपने रोजगार को खतम कर देता है। 40 साल का देवल गंदे प्रोग्राम्स देखकर अपनी भाभी के साथ दुराचार करने लगता है और सगे भाई आपस में जानी दुश्मन बन जाते हैं। 45 साल का पिता अपनी 15 साल की बेटी पर दुष्कर्म कर बैठते हैं, उसी गंदगी की बदौलत।

48 साल की माँ अश्लील प्रोग्राम्स के आक्रमण से अपने आप पर काबू गँवा देती है और अपने सगे बेटे के साथ सारी मर्यादाएँ लाँघ देती है। फिर दोनों के जीवन भयंकर उलझन में पड़ जाते हैं ।

55 साल का आदमी गंदे प्रोग्राम्स देखकर 50 साल की पड़ोसन से अनैतिक संबंध बाँध लेता है । उसका पति गुंडों से उसकी पिटाई करवाता है। बात पुलिस और कोर्ट तक पहुँचती है। दोनों परिवार तबाह हो जाते हैं।

68 साल के दादा गंदे प्रोग्राम्स के दुष्प्रभाव में आकर अपनी सगी पोती का जातीय शोषण करते हैं और सगा बेटा उनका सर फोड़ डालता है। आये दिन अखबारों में ऐसी खबरें आती ही रहती है।

I ask you

Are they all Adults ?

क्या 18 साल के ऊपर की उम्र की व्यक्ति एडल्ट ही होती है ?

मान भी लिया जाये कि 18 साल के ऊपर की उम्र की व्यक्ति एडल्ट ही होती है तो भी हमें स्वीकार करना होगा कि हर बात में वह एडल्ट नहीं होता।

18 साल का लड़का कार चला सकता है, सरकार नहीं चला सकता।

अतः चुनाव में खड़े रहने के लिये न्यूनतम उम्र अलग अलग होती है, कुछ राजकीय क्षेत्र में वह उम्र 35 भी होती है।

अब प्रश्न है कि अश्लील, नग्नता, बलात्कार, व्यभिचार वगैरह गंदगीयों से भरे हुए गंदे प्रोग्राम्स देखने पर जिन्हें कोई भी नुकशान होने की कोई संभावना न हो, ऐसी व्यक्ति की कौन सी उम्र हो सकती है ?

दूसरे शब्दों में गंदे प्रोग्राम्स देखने के लिये जो एडल्टनेस आवश्यक हो, वह एडल्टनेस कौन-सी उम्र में पा सकते हैं ?

क्या आप जानते हैं कि 80 साल की उम्र में भी आदमी को जातीय हवस सताती होती है ?

आप सभी आग्रह छोड़कर मुक्त मन से मनोमंथन करें तो आपको भी स्वीकारना होगा कि ऐसे एडल्ट तो केवल भगवान ही होते हैं। और भगवान को इन गंदे प्रोग्राम्स की कोई आवश्यकता नहीं है, जिन्हें आवश्यकता होती है वे एडल्ट ही नहीं होते।

इतनी बातों से यह प्रमाणित हो चुका है कि गंदे प्रोग्राम्स का सीधा अर्थ आतंकवाद है। ऐसे प्रोग्राम्स बच्चों के लिये भी आतंकवाद है और बड़ों के लिए भी आतंकवाद ही है। फिर चाहे वे कितनी भी उम्र के क्यों न हो ?

भारत को सरहदी देशों से जितना खतरा है उससे ज्यादा खतरा गंदे प्रोग्राम्स के आतंकवाद से है। यदि भारत चाईनीज एप्स को बेन कर सकता है तो इन गंदे प्रोग्राम्स को क्यों बेन क्यों नहीं कर सकता ?

एडल्ट के नाम पर इन्हें परमिट करना यह सराकर धोखा है, क्योंकि उन्हें देखने के लिये जरूरी एडल्टनेस 18 ही नहीं 68 साल की उम्र में भी नहीं आता।

इस गंदगी से सत्यानाश हो गया ।

मेरा नाम न आये इस शर्त पर मैं यह बात बताता हूँ । मेरा बेटा 26 साल का है, उसकी शादी किये डेढ़ साल हुआ है । कोरोना लोकडाउन से ही वह घंटों तक नेट पर गंदे से गंदे प्रोग्राम्स देखने का आदी बन गया है । जिसकी वजह से उसकी दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ बढ़ गयी, उसकी पत्नी उससे असंतुष्ट रहने लगी और हर बात पर उनका आपस में झगड़ा होने लगा । उसकी पत्नी यह कैसे बरदास्त करती कि उसका पति घंटों तक पराई नारी को इतनी गंदी स्थिति में देखता रहता है ?

दूसरी ओर मेरा बेटा भी अपनी पत्नी से असंतुष्ट रहने लगा, क्योंकि स्क्रीन पे दिखनेवाले हर शरीर से तो वह स्पर्धा नहीं कर सकती थी । मेरा बेटा अपनी पत्नी का बार-बार अपमान करने लगा । उसकी पत्नी कभी-कभी भयानक सामना करती, तो कभी कभी रो लेगी । दोनों के बीच अंतर बढ़ता गया।

तीसरी ओर मेरी बहू ने उसके शादी से पहले वाले मित्र से अनैतिक रिश्ता चालू कर दिया, क्योंकि उसकी जरूरत उसके पति से पूरी नहीं हो रही थी। उसके मित्र ने पैसे की आवश्यकता से उसे ब्लेकमैल करना चालू कर दिया, जिससे मेरी बहू का सेविंग्स तो पूरी हो ही गयी, मेरा घर भी खाली होने लगा।

चौथी ओर मेरे बेटे ने भी 3-4 युवतियों से अनैतिक संबंध बाँध लिये, वह घंटों तक जो देखता रहता था, उसमें यह होना एकदम सहज था । लेकिन उसका परिणाम बहुत ही भयानक आया । उनमें से दो युवतियाँ विवाहित थीं । उनके पतियों ने कुछ आदमियों के साथ आकर मेरी नज़र के सामने ही मेरे बेटे को बुरी तरह पीटा । उसकी हड्डी में दो फ्रेक्चर आ गये । अब तूने उसकी ओर नज़र भी की तो तुझे जान से मार डालेंगे, ऐसी धमकी देकर वे चले गये। मैं रोता रहा, उसकी माँ तो कब की बेहोश हो गयी थी ।

पाँचवी ओर जो अविवाहित युवतियाँ थी, वे उससे शादी करने का आग्रह करने लगी, आखिर यह भांडा फूट ही गया कि वह विवाहित है । एकने गुस्से में आकर बलात्कार का केस दर्ज करा दिया और दूसरी मेरे बेटे पर तलाक लेने के लिये दबाव डालने लगी ।

छठवीं ओर वैसे भी गंदे प्रोग्राम्स ने उसे इतना चिपका दिया था कि दुकान पर उसका ध्यान ही नहीं रहा था । धंधा टूटता ही चला जा रहा था । उसमें केस की वजह से कोर्ट के चक्कर चालू हो गये, सब कुछ चौपट हो गया।

सातवीं ओर कानून महिला की ही फेवर करने लगा, मेरे बेटे की जेल तो तय ही हो गया, फाँसी भी हो सकती है ।

आँठवी ओर उसकी माँ ने मुझसे यह भी शिकायत की है कि उसने अपनी बहन और माँ को भी बुरी नज़र से देखना शुरू कर दिया था । घंटों तक नारी को अश्लील स्थिति में देखने से यह भी होना ही था ।

बात केवल मेरी नहीं है, बात इस देश के करोड़ों घरों की है । लाखों परिवार बिखर गये हैं । लाखों लोगों नेट पे उपलब्ध गंदे प्रोग्राम्स के आदी बन गये हैं। लाखों बहू-बेटियाँ बलात्कारों की शिकार हो रही है । करोड़ों युवा व्यभिचारों में फँस कर अपना और दूसरों का जीवन उजाड़ रहे हैं । कितनी ही युवतियों पर उनके सगे भाई या सगे बेटे ने जबरदस्ती की है । पोती भी दादा से सुरक्षित नहीं है । देवर-भाभी के अनैतिक संबंधों ने सगे भाई का खून करने तक की परिस्थिति बनाई है ।

मैंने बेटे को खुले दिल से समझाने का प्रयास किया था । उसने कबूल किया था कि वो जानता है कि यह सब गलत है, गंदा है, बिल्कुल देखने जैसा नहीं है, पर वे उसे नहीं छोड़ सकता । वो जानता है कि उसकी सारी बर्बादी के मूल में यही गंदे प्रोग्राम्स है, पर वो अब बुरी तरह फँस चुका है । उसके बचने का एक ही उपाय है कि सरकार शीघ्र से शीघ्र इन गंदे प्रोग्राम्स पर प्रतिबंध लगा दे। यदि यह प्रसारण ही बंद हो गया तो वह कुछ ही दिनों में एक नोर्मल मानव की तरह जीने में सफल हो जायेगा । बात केवल मेरे बेटे की ही नहीं है, इस देश के करोड़ों जवानों की है ।

सरकार ने इतनी बुरी परिस्थिति देखने के बाद भी नई गाईडलाईन में 18 साल के ऊपर की व्यक्ति के लिये गंदे प्रोग्राम्स को हरा सिग्नल दे दिया, इतना ही नहीं Sex, Nudity etc. दिखा सकते हो ऐसा कहकर अधम से अधम प्रेरणा दे दी, इससे बड़ी मूर्खता और क्या हो सकती है ? कोई भी व्यक्ति अपनी कोमन सेन्स को समझ सकता है कि स्वस्थ शरीर,

स्वस्थ मन, स्वस्थ रोजगार एवं स्वस्थ पारिवारिक जीवन के लिये ये गंदे प्रोग्राम्स खतरा खड़ा करते हैं ।

एडल्ट्स के लिये भी ये प्रोग्राम्स हर तरह से खतरा ही है, तो उनके लिये भी ऐसी परमिशन देनी सरासर गलत ही है । ऑनलाइन शिक्षा की वजह से आज स्मार्ट फोन्स बच्चे-बच्चे तक पहुँच ही गये हैं तब बच्चे को भी इस गंदगी से कैसे बचाया जा सकेगा ? क्या चाइल्ड लोक संभवित है ? क्या सरकार नहीं जानती की कई सालों से बच्चे अपने मम्मी-पापा का स्मार्ट फोन युज़ कर रहे हैं ?

किसी का पर्स चुरा लेना या उसे गंदे प्रोग्राम्स दिखाना - दोनों एक ही बात है । किसी के घर पर डाका डालना या उसे गंदे प्रोग्राम्स दिखाना - दोनों एक ही बात है । किसी पति-पत्नी के बीच बड़ा झगड़ा करवाकर उन्हें तलाक लेने के लिये उकसाना या उन्हें गंदे प्रोग्राम्स दिखाना - दोनों एक ही बात है। किसी से बलात्कार करवाना या उसे गंदे प्रोग्राम्स दिखाना - दोनों एक ही बात है। यदि अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर गंदे प्रोग्राम्स देखना गलत नहीं है, तो अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का सीधा अर्थ हत्या स्वातंत्र्य है । तो अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का सीधा अर्थ आतंक स्वातंत्र्य है । तो अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का सीधा अर्थ लूट स्वातंत्र्य है । तो अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य का सीधा अर्थ बलात्कार स्वातंत्र्य है ।

इतनी हद तक के अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर कोई गुंडा ही स्टेम्प मार सकता है, सरकार नहीं ।

काश..... !

कल रिसी ने उसके पापा की हत्या कर दी ।
वह उनके फोन पर
एडल्ट प्रोग्राम देखना चाहता था ।
उन्होंने चाइल्ड लोक खोल देने को मना कर दिया ।
रिसी को इतना गुस्सा आया
की वो किचन में से चाकू लेकर आया
उसके पापा को लगा
कि मेरा बेटा मेरी हत्या नहीं कर सकता,
वे हँस रहे थे,
बेटे ने उनके पेट में चाकू डालकर
लंबा चीरा कर दिया
आँतें बाहर आ गयी
खून बहुत बह गया ।
108 आने से पहले
वे चल बसे ।
काश
सरकार ने ऐसे गंदे प्रोग्राम्स के
प्रसारण पर ही रोक लगा दी होती ।

ONLY **2** OPTIONS
FOR THE INDIAN GOVERNMENT

कुछ चीजे ऐसी भी होती है, कि जिसकी माँग भी हो, जिसका मार्केट भी हो, जनता का एक हिस्सा उसे पसंद भी करे, वो हिस्सा बडा भी हो, उससे किसी को आमदनी भी होती हो, कुछ लोगो को कुछ रोजगार भी मिलता हो, फिर भी इतने ही हेतु उस बिजनेस को चलने देने के लिये पर्याप्त नहीं है। बहुत ही महत्वपूर्ण बात तो यह है कि वह बिजनेस ऐसा न होना चाहिये जो शारीरिक - मानसिक - पारिवारिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य को नष्ट - भ्रष्ट कर दे। अन्यथा तो ड्रग्स के बिजनेस में भी माँग, मार्केट, आमदनी और कुछ लोगों का रोजगार हो सकता है, पर सरकार उस पर सख्त प्रतिबंध लगाती है, यतः वह बिजनेस समस्त जनता को बर्बाद करनेवाला है। यदि वह बिजनेस भी कुछ चँद लोगो के निजी हित के लिये कानूनी ठेहराया जाये तो इससे बडा आतंकवाद शायद और कोई नहीं हो सकता।

वर्तमान में ड्रग्स के जैसा ही या एक द्रष्टि से उससे भी भयानक एक बिजनेस चल रहा है, जिसका नाम है वल्गर मीडिया। बिलकुल नियंत्रणहीन यह मीडिया ऐसी गंदगी फैला रहा है जिससे हमारे देश की विराट जनता का शारीरिक - मानसिक - पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य एकदम खतरे में पड़ गया है।

एक नारी जब अत्यंत अभद्र स्थिति में अपने आपको प्रस्तुत करती है, तब दर्शको का मार्केट तो क्रियेट हो जाता है, यतः यह मानवस्वभाव की दुर्बलता है, कि यदि गंदा निमित्त मिले तो वह फिसल जाता है, शायद ही कोई उससे बच जाये, जो बच जाये उसे भगवान मानना चाहिये, और भगवान बनना यह मेजोरिटी पब्लिक के बश की बात नहीं है। जब वह नारी सभी मर्यादाये छोडकर सबकुछ दिखाने के लिये और सबकुछ करने के लिये तैयार हो जाती है, तब उसे विराट संख्यामें दर्शक तो मिल जाते है, प्रोग्राम - प्रोड्युसर्स को आमदनी मिल जाती है, अपना शरीर, इमान, शील, संस्कार और खानदानी बेचने के बदले में उस नारी को कुछ पैसे भी मिल जाते है, पर अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि फिर उस नारी के परिवार का क्याँ? फिर उस नारी के भविष्य का क्याँ? और इतना गंदा देख देखकर हर तरह से भ्रष्ट हो चुके उन दर्शको के परिवार का क्याँ ?

थोडे ही समय में वह नारी का क्याँ नतीजा होगा यह किसने सोचा है ? उसी मीडिया के द्वारा वह USE & THROW हो जायेगी, उसने अपना शील बेच दिया, अतः वह अपना सुखी विवाहित जीवन गवाँ बैठेगी। उसके भविष्य की जिम्मेदारी कोई नही लेगा। जब तक उसकी थोडी भी जवानी बाकी होगी, तब तक उसे वेश्या बनना पडेगा। उसके बाद उसका और ज्यादा THROW होगा और मरते दम तक उसे नर्क जैसे दुःखों को सहन करना पडेगा। क्याँ आपको नहीं लगता कि नारी का सबसे बडा शोषण, नारी पर सबसे ज्यादा अत्याचार और सब से उत्कृष्ट बलात्कार यह वल्गर मीडिया ही कर रहा है?

वल्गर मीडियाने उसे रोजगार दिया? या फिर हवसखोर भेडिये दिये? वल्गर मीडियाने उसे पैसे दिये? या फिर उसकी पारिवारिक सुख - संपत्ति चुरा ली? वल्गर मीडियाने उसका भला किया? या फिर उसकी पुरी जिंदगी ही बर्बाद कर दी? इसे रोजगार कहना चाहिये? या भयानक अत्याचार कहना चाहिये?

रही बात दर्शको की तो जब दर्शक बेडरुम को स्क्रीन पे ला देता है, तब उसका बेडरुम खाली हो जाता है। उसके पास अपनी पत्नी को देने के लिये कुछ बचता ही नहीं, यह पुरुष की सीमा होती है। फिर खडी होती है विवाहीत जीवन की जटिल समस्यायें, चलता रहता है गृहयुद्ध, असंतोष की आग लाखो विवाहीत जीवन को भस्मीभूत कर देती है। आप को सबूत चाहिये तो भयानक रूप से बढी हुई डिवोर्स की संख्या ही देख ले। जब मीडिया में इतनी गंदगी नहीं थी, तब इतने डिवोर्स भी नहीं थे। निष्कर्ष यह है कि वल्गर मीडिया करोडों नारीओं से उनका पति छिन रहा है, जो उसका जीवनसर्वस्व था। एक नारी को जीते जी मार देनेके लिये इससे बडा हथियार और क्या हो सकता है ?

मीडिया तो हजारो मैं से दो चार सुंदर चहेरे ढुँढकर रख देता है, वैसे चहेरे - स्कीन - स्वीच - अंग सबके घर में नहीं होते,। जब जनता स्क्रीन पर किसी को पसंद करती है, तब अपने पति या पत्नी को नापसंद करती है, फिर घरेलु झगडे लगातार चलते रहते है। I DON'T LIKE YOU तो नहीं कहा जाता, पर इसी वजह से बहाने मिलते रहते है, पति - पत्नी झगडते रहते है, घर कुरुक्षेत्र बन जाता है, संतान अनाथ और बेबस से हो जाते है। आज देशभर में करोडों घरों की यह दास्तान है, क्याँ इसे मनोरंजन कह सकते है ?

दुसरी और लाखों - करोडों नारीयाँ लगातार इसी वल्गर मीडिया से सीखती रहती है, कि मैं भी यदि इस तरह अपने अडोश - पडोश के पुरुषों के साथ, अपने स्टुडन्ट के साथ, अपने देवर या ससुर के साथे, अपने भाइ या बेटे के साथ या अपने पिता के साथ भी व्यभिचार करुं तो उसमें कुछ भी गलत नहीं है।

कहा जाता है कि यदि एक झूठ यदि सात बार सुना जाये तो फिर व्यक्ति उसे सच मान लेता है। सातसो बार गंदे से गंदा व्यभिचार खुलेआम देख चुके लोग व्यभिचारो से बच पायेंगे ? व्यभिचारों के फल स्वरूप भयंकर घरेलु हिंसा, सगे भाइओ में भयानक दुश्मनी, डिवोर्स, पुलिस केस, कोर्ट केस, आर्थिक बर्बादी, अनाथ बालक, जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं की भी अपूर्ति - क्याँ इन सब से भी वे बच पायेंगे ? वल्गर मीडिया मनोरंजन दे रहा है ? या एक जीवन में अनेक मौत दे रहा है ?

तीसरी और गंदे से गंदे प्रोग्राम्स देखकर करोडों पुरुषों की हवस भड़क जाती है तब उनके संपर्क में आने वाली उसकी छोटी बेटी भी असुरक्षित हो जाती है और बुढी माँ भी असुरक्षित हो जाती है, तो फिर दुसरी नारीयाँ तो कैसे सुरक्षित रह सकती है ? वल्गर मीडिया स्पष्ट रुप से करोडो पुरुषो को अपने आसपास जो भी नारी मिले उस पर बलात्कार करने के लिये उकसा रहा है। क्याँ यह वल्गर मीडिया का भयानक अपराध नहीं है ? क्याँ कुछ चँद लोगो की जेब भरने के लिये देश की करोडों मातायें, बहनें, बहु - बेटियाँ - इन सब पर इतना बड़ा जोखिम खडा करना न्यायिक है ? क्याँ ऐसा करने की इजाजत सरकार किसी को दे सकती है ? क्याँ ऐसी इजाजत देने की इजाजत भारतीय संविधान और धाराशास्त्र सरकार को दे रहा है ? क्याँ मीडिया के नियंत्रित अंश भी इस तरह की नियंत्रणमुक्ति की माँग नहीं करेंगे ? क्याँ उसके भयानक से भी भयानक परिणाम भुगतने के लिये यह देश तैयार है ? क्याँ ऐसी गंदी गालियाँ, भयंकर अश्लीलता और गंदे से गंदा व्यभिचार इस देश की संस्कृति, धर्मों, सामाजिक परिस्थिति और पारिवारिक स्वस्थ जीवन के अनुरुप है ?

या सरकार को आज ही यह सारी की सारी गंदगी साफ करके मीडिया को सदगुणों, नैतिकता, सदाचार और करुणा का प्रसार करने के लिये बाध्य कर देना चाहिये, या फिर जाहिर कर देना चाहिये कि अब से भारतीय मानव को शीघ्र से शीघ्र पशु बन जाना है, जहाँ क्या बोलना - न बोलना, खाना न खाना, करना - न करना - दिखाना - न दिखाना - इसके विषय में कोई भी नीति - नियम नही हैं, हर व्यक्ति किसी

के भी साथ पति/पत्नी जैसा व्यवहार कर सकता है, फिर चाहे वे उसके देवर - भाभी - सास - ससुर - बेटा - बेटी या माता - पिता भी क्यों न हो, अब न बलात्कार अपराध है, न ही खून। आप शुभ शब्द बोलो या गंदी से गंदी गालियाँ, आप कपडे पहनो या निर्वस्त्र प्रदर्शन करो - बँधन और नीतिनियम तो मानवीय संस्कृति में, व्रीय ही होते है, पशुओ में नहीं। सरकार के पास यही दो विकल्प है, उनमें से वह जो चाहे, चुन सकती हैं।

क्याँ इस देश में कोई नारीवादी संस्था हि नहीं है ?

आज की नारी अनेक समस्याओं से मानो जिंदा जल रही है . आज की नारी प्रतिदिन थोड़ी ज्यादा असुरक्षित होती जाती है, कब कौन क्याँ करें, और नारी कैसी स्थिति में पहुँच जाये, उसका कोई भरोसा नहीं है, दुसरी बाजु घरेलु झगड़े और घरेलु हिंसाये बढ़ रही है. तीसरी बाजु नारी को न चाहते हुए भी अनुचित वस्त्र पहनने पड़े ऐसा वातावरण बन रहा है, चौथी बाजु उसे जोब करने के लिये उकसाये ऐसा माहोल है, पाँचवी बाजु महेंगाई की बजह से उसे मज़बूरी से भी जोब करनी पड़े ऐसी परिस्थिति है, पाँचवी बाजु हवसखोर भेडिये उस पर नजर बिगाड़ रहे है, छठवी बाजु विकृत मनोदशावाले लोग उसका पीछा कर रहे है, सातवी बाजु नारी की आपनी हवस हजारगुना बढे, और उन भेडियों की भी हवस हजारगुना बढे उसके लिये मीडिया हजारगुनी ताकत के साथ तूट पड़ा है, आँठवी बाजु हर कदम पर ऐसे ही निमित्त उभर रहे है, जिनसे अच्छे अच्छे लोग भी भ्रष्ट हो जाये|

ऐसे वातावरण में नौवी बाजु एक एसा राक्षस आ चूका है, जो नारीहित के टुकड़े टुकड़े करके नारी की भयानक दुर्दशा कर रहा है, जिसका नाम है नियंत्रणमुक्त मीडिया | जहा नारी को गंदे से भी गंदी स्थिति मे प्रस्तुत किया जाये , जहा नारी को अपने सगे भाई , सगे बेटे, सगे बाप, देवर और ससुर के साथ व्यभिचार करती हुयी दिखाई जाये, जहा नारी अपने स्टुडन्ट को अपने साथ व्यभिचार करने के लिये प्रेरित करती हुइ दिखाई जाये, जहा नारी के मुँह से भी गंदी से गंदी गालियाँ बुलवायी जाये, जहा नारी को अश्लीलता की सभी सरहदों का उल्लंघन करती हुई दिखाई जाये, जहा नारीसम्मान की धज्जिया उड़ाइ जाये, जहा हर कोइ नारी वेश्या ही है ऐसा सा भयानक झूठ प्रस्थापित किया जाये, जहा ऐसा पुरवार करने का परोक्ष प्रयास किया जाये कि विश्व की कोई भी नारी में मातृत्व, भगिनीत्व , पुत्रीत्व , भाभीत्व , सासत्व , मौसीत्व आदि कुछ भी है हि नहीं, दुनिया की सभी नारीयाँ आप की पत्नी ही है- ऐसा समज लो, फिर चाहे वह आप की सगी माँ हि क्यों न हो ?

यह मीडिया साबित करना चाहता है कि कोइ भी नारी बदचलन, चरित्रहीन और वेश्या ही होती है, यह मीडिया साबित करना चाहता है कि यदि आप कोई भी नारी को बुरी से भी बुरी नजर से देख रहे हो तो आप कुछ भी गलत नहीं कर रहे हो | यह मीडिया साबित करना चाहते है कि संसार की सभी की सभी नारी आपके मनोरंजन का और गंदी गालियों का पात्र बन सकती है | यह मीडिया साबित करना चाहता है कि न बलात्कार में कोइ अपराध है न ही बेवफाइ में, आप नारी को बिन्धास्त एक खिलौना बना सकते हो, और उसके साथ जो खेल खेलना चाहों वह खेल सकते हो | यह मीडिया साबित करना चाहता है कि नारी कभी भी सम्माननीय होती ही नहीं है, नारी केवल आप की हवस की भूख को मिटाने के लिये एक प्रकार का भोजन है, जिसे चबा कर खा लो और उसका रस चूस कर उसे विष्टा की तरह फैंक दो |

आँकड़े हि दिखा रहे है कि लोकडाउन के दौरान इसी राक्षस ने अच्छे अच्छे लोगों को हवसखोर भेडिया बना दिया और जैसे ही लोकडाउन पूरा हुआ वे भेडिये नारी पर तूट पड़े | भारत की हज़ारो – लाखो नारीयों की इज्जत लुटी गयी | करोडो नारीयाँ अपने घर मे ही असुरक्षित हो गयी | नारी अबला होती है, जो पारिवारिक सुरक्षा में ही सुरक्षित रह सकती है , इस राक्षसने परिवार को ही तोड़ दिया , चूर चूर कर दिया | जब माँ माँ

नहीं रहती , बहन बहन नहीं रहती, बेटी बेटी नहीं रहती, भाभी भाभी नहीं रहती, तब पत्नी भी पत्नी नहीं रहती| परिवार तूटने के बाद, परिवार के बिखर जाने के बाद नारी के संपूर्ण भविष्य की जिम्मेदारी कौन लेगा ? क्याँ वे हवसखोर भेडिये उसका दायित्व अपने सिर लेंगे ? क्याँ वे नारी को सम्मानपूर्व जीवन प्रदान करेंगे ? या फिर उस नारी को मज़बूरी से भी वेश्या हि बनना पड़ेगा ? शायद उसने जीवननिर्वाह के लिये वेश्यावृत्ति भी कर ली, फिर भी बुढ़ापे में उस का कौन ? कौन उसे पालेगा ? कौन उसकी देखभाल करेगा ? कौन उसका हमदर्द बनेगा ? कौन उसे अंतिम श्वास तक सँभालेगा ? वे हवसखोर भेडिये ? वे तो उसके पास कुछ होगा वो भी लुट कर भाग जायेंगे |

नारी पर इससे बड़ा अत्याचार और क्याँ हो सकता है ? फिर उसका टूटा हुआ दिल व्यसनों की और मुड़ेगा ,वह ड्रग्स की आदी बनेगी , वह डिप्रेशन में चली जाएगी , वह शारीरिक और मानसिक रोगों की शिकार बनेगी , वह अपने संतानों की अपने हाथों से हत्या करके खुद आत्महत्या कर लेगी |

भारतीय संस्कृति ने शील , सदाचार, लज्जा और मर्यादाओं के द्वारा नारी को जो सम्मान दिया है, उसका दुनियाभर में कोई जवाब नहीं है | नारीसम्मान हि नारी को भी स्वस्थ जीवन दे सकता है, और परिवार , समाज तथा देश को भी स्वस्थ जीवन दे सकता है , आज देश तूट रहा है, यत: समाज तूट रहा है, यत: परिवार तूट रहा है , यत: नारी तूट रही है, यत: नारीसम्मान तूट रहा है, यत: इस वल्गर मीडिया नाम के राक्षस को हर बँधन से, हर नीति – नियम से मुक्ति दी गयी है |

क्याँ कुछ अल्प लोगो की जेब भरने के लिये नारी को इस तरह बलि की बकरी बना देना न्यायिक है ? क्याँ कुछ अल्प लोगो की जेब भरने के लिये इस देश के १३५ करोड़ लोगों को हर तरह से बर्बाद कर देना उचित है ? क्याँ कुछ अल्प लोगो की जेब भरने के लिये पूरे देश के अर्थतंत्र को ख़तम कर देना जरुरी है ? आप मानो या न मानो , दिन रात इसी गंदगी में डुबे हुए युवा- पौढ़ अपनी पढाई , धंधा, नौकरी , रोजगार, आमदनी, घर की जिम्मेदारी , तन का आरोग्य , मन का स्वास्थ्य सब कुछ इसी गंदगी पर कुरबान कर रहे है, इस तरह महेंगाइ बढ़ेगी , बेरोजगारी बढ़ेगी और देश के अर्थतंत्र की कमर तूट जाएगी इतना निश्चित है|

नारीसम्मान पुरे राष्ट्र की आधारशिला होती है, जब वह तूट जाती है, तब पूरा राष्ट्र टूट – फूट कर गिर पड़ता है | आश्चर्य तो इस बात का है कि अब तक एक भी नारीवादी संस्था इस वल्गर मीडिया स्वरूप राक्षस के खिलाफ कड़ी नहीं होई | उससे भी ज्यादा आश्चर्य और आघात की बात यह है कि जब जब कोइ सज्जन नारीसम्मान के लिए आगे आता है और जिस जिस हेतु से नारी की गंदी मज़ाक उड़ायी जाती है उसका विरोध करता है , तब तब उसका विरोध किया जाता है, और उसका उपहास किया जाता है | फलस्वरूप नारी की बर्बादी जारी रहती है | फलस्वरूप परिवार, समाज और राष्ट्र की बर्बादी भी जारी रहती है |

आज महर्षि वेदव्यास के शब्द फिर से बोलने का मन हो रहा है

उर्ध्वबाहु र्बिरौम्येष , न च कश्चित् शृणोति मे |

“मैं अपने दौनों हाथ ऊपर करके चिल्ला रहा हूँ | पर कोइ मेरी बात नहीं सुन रहा |”

क्याँ भारत सचमुच बर्बाद हो जायेगा ?

क्याँ कोइ भी यह बात नहीँ सुनेगा ? क्याँ नारीवादी संस्था भी नहीं ? क्याँ कोइ नारी भी नहीं ?

नहीं , ऐसा तो हम कैसे होने दे ? चलो , हम सब मिलके आवाज उठाये , फिर इस राक्षस के पास भाग खड़े होने के सिवाँ और कोई विकल्प ही नहीं होगा |

विश्व का एक भी धर्म प्रसारतंत्र की गंदगी का समर्थन नहीं कर रहा है |

विश्व के सौभाग्य की बात है कि भले ही मानवने इस आखरी अर्धसदी में असंख्य परिवर्तन स्वीकार लिये | पर अपने अपने धर्म के मूल ग्रंथ में कोई भी परिवर्तन नहीं किया | रिज़ल्ट यह आया की आदमी भले ही भ्रष्टाचार की सारी सीमाये लाँघ गया, धर्मग्रंथ तो नैतिकता और प्रमाणिकता का ही संदेश दे ते रहे, आदमी भले ही निर्दय और निष्ठुर बन गया, धर्मग्रंथ तो प्रेम और करुणा का ही संदेश देते रहे, आदमी भले ही बेलगाम झूठ बोलने लगा, धर्मग्रंथ तो सत्य का ही उपदेश देते रहे| आदमी भले हि क्रोध से आगबबूला होने लगा धर्मग्रंथ तो शांति और क्षमा का ही उपदेश देते रहे |

इसी शृंखला में एक अत्यंत गंभीर बात यह बनी की पिछले पचास साल से हमारे देश में शिष्ट वेष , शिष्ट भाषा और सदाचार में बहुत ही भयानक गिरावट आयी | हमारी सामाजिक मर्यादाये शिथिल बनी | हमारे यहाँ कोई भी पुरुष अपनी पत्नी के साथ भी जाहिर में बात करने में शर्म महसूस करता था, उसे जाहिर में छूने की तो कल्पना भी नहीं कर सकता था | और जो उसकी पत्नी नहीं है उसके सामने तो देखना भी पाप माना जाता था | यह वास्तव में बंधन नहीं था, सुखी स्वस्थ पारिवारिक जीवन और एक तंदुरस्त समाज की नीव थी | तलाक , व्यभिचार , पुलिस केस, कोर्ट केस, परस्पर का अविश्वास , ब्लेकमेलिंग , भयंकर झगड़े , पूरी की पूरी रात तक तूँ तूँ मैं मैं, अनाथ बच्चे , भ्रूणहत्याए , भयंकर आर्थिक संकट , रोजी की समस्या , नारी की सलामती की समस्या , बच्चों की परवरिश की समस्या , अपनी संतान भी वास्तव में अपनी संतान है याँ नहीं , इस बात की आशंका की समस्या , भयंकर मारपीट , पति / पत्नी की हत्या या आत्महत्या – इन सब का हमारी संस्कृति में स्थान ही नहीं था |

पर शिष्ट वेष , शिष्ट भाषा और सदाचार में गिरावट होने से इन सारी समस्याओं ने हमारे पूरे देश पर आक्रमण किया और देश हर तरह से बर्बाद होने लगा | इस सारी बर्बादी में प्रमुख योगदान किसी का रहा हो , तो वह है प्रसारतंत्र |

यदि एक नारी हमारे महोल्ले में आकर जाहिर में अपने कपडे उतारती है याँ कोई अश्लील हरकत करती है, तो हमारा पूरा महोल्ला उसका विरोध करेगा, पुलिस को बुलाएगा, उस नारी को धक्के मरवाकर निकाल देगा, फिर कभी नहीं आने की चेतावनी देगा, यत: हम समजते है कि यह न केवल हमारे धर्म और संस्कार से विरुद्ध है, हमारे पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिये भी बड़ा खतरा है, यदि ऐसा ही चलता रहा तो हमारी बहु – बेटियाँ वेश्या बन जाएगी , हमारे लड़के आवारा और अय्याश बन जायेंगे , हमारे घर घर के विवाह सम्बन्ध तुटने लगेंगे , हमारे समाज की मनोदशा अत्यंत विकृत हो जाएगी, कोई भी कभी भी अपने दिमाग का संतुलन गवा बैठे और किसी के भी ऊपर बलात्कार कर दे, ऐसी स्थिति आ जायेगी , यह केवल नग्नता या अश्लीलता ही नहीं है, यह हमारा सब कुछ लूँट जाने का षड्यंत्र है, उसे तो हम कैसे बरदास्त कर सकते है ?

मान लो कि महोल्ला का कोई लड़का बीच में आता है, "आप को क्याँ एतराज है ? आपको मत देखना हो तो मत देखो, अपने घर में जाकर सो जाओ , मुजे यह देखना पसंद है, मैं यही देखना चाहता हूँ, मुजे ऐसा देखने में मज़ा आता है, तो आप उस नारी को भगानेवाले कौन होते हो ?"

बोलो, अब हमारा क्याँ प्रतिभाव होगा ? महोल्ले के समज़दार पौढ़ लोग उस लड़के को एक चांटा मार देंगे और कहेंगे , बेवकूफ ! यह इन्सानों का महोल्ला है , जहाँ नैतिकता के नीतिनियम है और सदाचार की मर्यादाए है , यदि तुजे नग्नता और अश्लीलता ही चाहिये, तो पशुओं के साथ रहना शुरू कर दे, वहा न वस्त्र होते है , न नैतिकता , न सदाचार , न ही मर्यादा | यह महोल्ला तो मानवों का है | यहा यह सब नहीं चलेगा |"

सच बोलो, यह ही होगा ना हमारा प्रतिभाव ! मैं पूछना चाहता हूँ कि वही अभद्रता , नग्नता , अश्लीलता और अनैतिकता यदि हमारी टी.वी. स्क्रीन पर या मोबाईल स्क्रीन पर आये, तो क्याँ वह अच्छी हो जायेगी ? न्यायिक हो जायेगी ? क्याँ उसके भी वही सभी दुष्परिणाम नहीं है ? क्याँ उससे हमारा परिवार नष्ट – भ्रष्ट नहीं हो जायेगा ? क्यों उससे हमारा सामाजिक स्वास्थ्य बिगड़ नहीं जायेगा ? क्याँ उससे हमारी बहु – बेटीयाँ वेश्या नहीं बन जायेगी ? क्याँ उससे हमारे लड़के आवारा और अय्याश नहीं बन जायेंगे ?

यदि बात वही की वही है, परिणाम भी वही का वही है, तो फिर एक का सख्त विरोध और दुसरे का हार्दिक स्वागत, इतना बड़ा अंतर क्यों ? इतना अंतर होते हुए भी यह बर्बादी को रोका जा सकता है, यदि प्रसारतंत्र अश्लील प्रसारण पर नियंत्रण लाये | पर दुर्भाग्य से हमारे सेन्सर बोर्ड की कैंची उत्तरोत्तर कुंठित होती जा रही है, प्रसारतंत्र हमारे अच्छे से अच्छे घरो में गंदी से गंदी गंदगी उगल रहा है और इतना मानो कम हो, इस तरह वर्तमान में कुछ प्रसारण को सभी नियंत्रणों से मुक्त करके सारी सीमाए लाँघ दी है, और इस देश के १३५ करोड़ लोगों की पारिवारिक – शारीरिक – मानसिक – आर्थिक – सामाजिक – नैतिक स्वस्थता पर एक अणुबम ही फैंक दिया है | इसके फलस्वरूप समग्र देश में यौन – अपराधो में और खून – मारपीट – झगड़े जैसे अपराधो में भयंकर वृध्धि हो रही है | सारा का सारा देश बर्बादी की और दौड़ सा रहा है |

एक बाजु स्थिति यह है, तो दुसरी बाजु हमारे देश के प्रत्येक धर्म के धर्मग्रंथ इस नग्नता , अश्लीलता , व्यभिचार और अनैतिकता का स्पष्ट रूप से विरोध ही कर रहे है |

वैदिक धर्म में देखे, तो पुराणों में – शीलभङ्गेन दुर्वृता: पातयन्ति कुलत्रयम् - जैसे वचनों से गंदगी भरे प्रसार तंत्र का एक तरह का विरोध ही किया गया है| भगवान श्रीराम की मर्यादा पुरुषोत्तमता , भगवान श्री कृष्ण ने की हुई द्रौपदी की शीलरक्षा , विषयान् विषवत्त्यज – जैसे गीताग्रंथो का संदेश, यह सब देखते हुए हिन्दु समाज के एक भी अनुयायी गंदे प्रोग्राम्स के प्रसार का विरोधी ही हो सकते है |

बौध्ध धर्म में देखे , तो धर्मपद ग्रंथमे – यो च वस्ससतं जीवे – श्लोक से दु:शील का १०० साल जीना भी निष्फल बताया गया है और सुशील का एक दिन भी जीना श्रेयस्कर बताया गया है , तो बौध्ध धर्म का कोइ भी अनुयायी ऐसी दु:शीलता का समर्थन कैसे कर सकता है ?

इस्लाम धर्म में देखे तो कुर्आन – मजीद में सूर: निसा की १५-१६-१७-२३-२४-२५-२६ वी आयतों में, सूर: बनी इसराइल की ३२ वी आयत में और अन्य भी आयतों में बदकारी – व्यभिचार , अश्लीलता , अपशब्दों एवं

दु:शीलता पर अल्लाह की स्पष्ट मनाई घोषित की गयी है, तो स्पष्ट है कि कोइ भी मोमिन इस गंदे प्रसारतंत्र का विरोधी ही हो सकता है|

जैन धर्म में देखे तो उत्तराध्ययन सूत्र आदि आगमो में शील, सदाचार, वैराग्य, मर्यादा और नैतिकता का जो स्पष्ट उपदेश दिया गया है, उसे देखे तो कोई भी जैन इस अश्लील प्रसारतंत्र के खिलाफ ही हो सकता है|

सीख धर्म में देखे तो गुरु साहिबों के हुकुमनामो में- चोरी – जारी नहीं करणी – ऐसा स्पष्ट आदेश है, तो कोई भी सीख इस प्रसारतंत्र की गंदगी का स्वागत नहीं ही कर सकता |

स्वामिनारायण धर्म में देखे तो वचनामृतो में गढडा प्रकरण , सारंगपुर प्रकरण , लोया प्रकरण आदि अनेक प्रकरणों में दुराचार , द्रष्टिदोष , हवस आदि का सशक्त रूप से खंडन किया गया है, तो स्वामिनारायण धर्म का कोइ भी अनुयायी यही चाहेगा कि यह गंदा प्रसारण शीघ्र से शीघ्र समाप्त हो जाये|

ख्रिस्ती धर्म में देखे तो बाइबल में स्पष्ट कहा है की परस्त्री के साथ व्यभिचारी संबंध रखनेवाला अत्यंत बुद्धिहीन है , वह अपनी आत्मा के लिये, विनाशक कृत्य कर रहा है, तो ख्रिस्ती धर्म का कोई भी फोलोअर इस गंदगी का समर्थन नहीं ही कर सकता है |

एक ओर हमारे श्रध्धेय सभी भगवान एक ही आवाज में हमें आदेश कर रहे है कि यह सारा कूड़ा- कचरा उठा कर इतना दूर फैंक दो कि उसकी गंध तक न आये, दुसरी ओर हमारी पारिवारिक और सामाजिक परिस्थिति पर यही कचरा बमवर्षा कर रहा है और तीसरी ओर प्रसारतंत्र की शिथिलता से यह कचरा ज्यादा से ज्यादा बदबूदार होता जा रहा है , अब हमें क्याँ करना वह हमें तय करना है |

***